आचार्य श्रुतमुनि

जीवन-परिचय : डॉ. ज्योतिप्रसाद जी ने 'जैन सन्देश' में प्रकाशित अपने एक लेख में 17 श्रुतमुनि हुए हैं—ऐसा बताया है। परन्तु हम यहाँ परमागमसार, आस्रवत्रिभंगी और भावत्रिभंगी जैसे ग्रन्थों के रचयिता आचार्य श्रुतमुनि का परिचय प्रस्तुत कर रहे हैं। आचार्य श्रुतमुनि मूलसंघ देशीयगण पुस्तकगच्छ और कुन्दकुन्द आम्नाय के आचार्य हैं। इनके गुरु बालचन्द्र थे, जिनसे इन्होंने अणुव्रत ग्रहण किए थे। बाद में इन्होंने अभयचन्द्र सिद्धान्तदेव से महाव्रत एवं अभयसूरि और प्रभाचन्द्र आचार्य से शास्त्रों का ज्ञान ग्रहण किया था।

आचार्य श्रुतमुनि की रचनाओं के आधार पर इनका समय सन् 1341 (विक्रम संवत् 1398) माना जाता है, क्योंकि आपकी अन्तिम रचना परमागमसार में उसका रचनाकाल शक संवत् 1262 (विक्रम संवत् 1397) वृष संवत्सर मार्गशीर्ष सुदी सप्तमी गुरुवार दिया है।

रचना-परिचय : आचार्य श्रुतमुनि की तीन रचनाएँ प्राप्त होती हैं—

1. भावत्रिभंगी : इस ग्रन्थ का नाम भावसंग्रह भी है। इसमें 123 गाथाएँ हैं। इसमें औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, औदयिक और पारिणामिक आदि भावों के तीन भंग (भेद) करके उनका वर्णन किया गया है। अत: इसका नाम 'भावत्रिभंगी' रखा गया है। इस ग्रन्थ में 14 गुणस्थानों और 14 मार्गणास्थानों का भी वर्णन किया है।

2. आस्रवत्रिभंगी : इस ग्रन्थ में 62 गाथाएँ हैं। इस ग्रन्थ में मिथ्यात्व, अविरति, कषाय और योग इन मूल आस्रवों का वर्णन एवं इनके भेदों का वर्णन गुणस्थान और मार्गणास्थान के अनुसार किया है। इसमें गोम्मटसार ग्रन्थ की अनेक गाथाओं को महत्त्वपूर्ण मान कर लिया है।

3. परमागमसार : इस ग्रन्थ में 230 गाथाएँ हैं और आठ अधिकार हैं। पंचास्तिकाय, षट्द्रव्य, सप्ततत्त्व, नवपदार्थ, बन्ध और बन्ध के कारण, मोक्ष और मोक्ष के कारणों का क्रमश: वर्णन इस ग्रन्थ में है। ग्रन्थ के अन्त में ग्रन्थ-रचना-काल भी दिया है।